JAMNALAL BAJAJ
FOUNDATION

श्रीमती अनुताई वाघ

महिला उत्थान तथा बाल कल्याण पुरस्कार प्राप्तकर्ता – १९८५

आज का दिन मेरे जीवन में बड़े सौभाग्य का दिन है। सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं लखपति हो जाऊं। माताश्री जानकीदेवी की लिखी हुई आत्मकथा ''मेरी जीवन यात्रा'' मैंने पढ़ी थी। सुखी संपन्न परिवार की गृहिणी माता भी समाज कल्याण के लिए कितना कष्ट उठा सकती है यह मैंने उस पुस्तक में देख। पू. महात्मा गांधी के आदेश से माताजी कितना कष्ट उठाती थीं। पढ़कर आश्चर्य हुआ और आनंद भी हुआ। मैंने उस पुस्तक का मराठी में अनुवाद करके अपनी ''सावित्री'' मासिक पत्रिका में छपवाया ।

हमारे देश की बहनें तथा बच्चे सुखी हों इसलिए बहुत कुछ करना बाकी है। यह दो व्यक्तियों का काम नहीं। जगह–जगह स्वयंसेवी संस्थाओं तथा भाई बहनों की जरूरत है। बड़ी भारी फौज के इस काम में लग जाने की आवश्यकता है। खास करके जंगल पहाड़ों में रहने वाले हमारे आदिवासी भाई बहनों तथा बालकों की उन्नति के लिए निरपेक्ष सेवाभावी कार्यकर्ताओं की जरूरत है। गत ४० साल मैंने देहाती बालकों तथा बहनों में काम किया है। समस्याएं आती रहीं, उनको सुलझाते दूसरी समस्याएं खड़ी होती गई। उनकी सुलझान में से नयी समस्याएं निर्माण होना यह सिलसिला आज भी चालू है। ऐसे कामों में खूब आनंद आता है। जिसे में ब्रह्मानंद मानती हूं।

इन समस्याओं में से हाल में मेरे सामने एक प्रकल्प खड़ा हुआ है। हमारे कोसबाड़ से कोइं ४० किलोमीटर की दूरी पर ''दामोण'' नाम का एक आदिवासी देहात है। सुधारित दुनिया से वे बिलकुल दूर, पिछड़े हुए हैं। निरक्षरता, निर्धनता, व्यसनाधीनता, रोगग्रस्तता सभी की काली छाया पड़ी हुई है। मैंने इन ग्रामों की बहुविघ सेवा करने का नया कार्य हाथ में लिया है – ''ग्राम मंगल'' जंगलों और पहाड़ी बच्चों की शिक्षा, उनके जीवन को समर्थ बनाने वाली, उनकी अस्मिता को जागृत करने वाली शिक्षा का स्वरूप कैसा हो इस प्रकार का नमूना प्रस्थापित करने का प्रयत्न है। उनके सरल जीवन से अभ्यासक्रम खोजने का यह प्रयत्न है। यह मेरा नया प्रयोग शुरु हुआ है। इसे मैं मुक्त प्राथमिक शाला या सहज शिक्षण केन्द्र कहती हूँ।

आदिवासी बालक जंगल के बालराजा हैं । धूप हो, जाड़ा हो या बारिश, वे जंगल में स्वच्छंद घूमते हैं, पेड़ पर चढ़ते हैं, कूदते हैं, पहाड़ियों पर तेजी से चढ़ते हैं, उतर जाते हैं। नदियों में तैरते हैं, मछलियां पकड़ते हैं। पंछी का शिकार करते हैं। खरगोशों तथा हिरनों के पीछे दौड़ते हैं। उनका भी शिकार करते हैं। कच्चे फल भी खा लेते हैं । डरना इनके स्वभाव में है ही नहीं । सदैव हंसते रहते हैं, नजर तीक्ष्ण है। बुद्धि तेज है। स्वयंप्रयत्न के आदी हैं। सच कहें तो अनमोल रत्नों का भण्डार हैं। लेकिन वह गुप्त खजाना है। ये रत्न अनघड़ हैं। हमें इन रत्नों को तराश कर गढ़ना है।

वे अधपेट रहते हैं। इनके शरीर पर कपड़ा नहीं है, ऐसा कहेंगे तो भी हर्ज नहीं। दूध, दही, घी का नाम तक वे नहीं जानते, टूटी फूटी झोपड़ियों में वे रहते हैं।

उनके मां बाप सुबह उठकर कुछ न कुछ काम के लिए बाहर जाते हैं। घर में खाली बच्चे ही होते हैं, जिनमें १०–१२ साल के बच्चों से लेकर नन्हें शिशुओं का समावेश है। घर में रहकर भाई बहनों को सम्हालना, पानी भरना, आदि काम बड़े बच्चों को करना पड़ता है। घर के लिए ईंधन इकट्ठा करना यह भी एक काम है ही। १०–१२ साल के बाद लड़कों को घर के बाहर छोटे–छोटे कामों पर थोड़ी बहुत कमाई के लिए जाना पड़ता है। क्योंकि मां बाप दोनों काम करते हैं तो भी घर में कल्पना के बाहर दारिद्र होने के कारण बच्चों को कुछ न कुछ कमाई का काम करना ही पड़ता है।

इस प्रकार बच्चों की पढ़ाई में काफी दिक्कतें आती हैं। यह सब दूर करना, और सब बच्चों को

स्कूल में जाते रहना यह एक जटिल समस्या हल करनी है। बच्चे बहुत तेज हैं, लेकिन सुधारित दूनिया से बहुत ही अंधरे में हैं। इसलिए उनके लिए प ढ़ाई का तरीका भी अलग होना चाहिए। शहरों में चलने वाली पद्धति और पाठ्य पुस्तकें यहां नहीं चलेंगी। इनके जीवन में से तथा परिवार में से अभ्यासक्रम निकलेगा। प्रकृति में बिखरे हूए शैक्षणिक साधनों का इस्तेमाल करना पड़ेगा। बातचीत द्वारा, प्रात्यक्षिकों द्वारा पढ़ाई होगी। यह सब होने के लिए पाठशाला भी अलग प्रकार की होगी। पाठशाला का समय बच्चों के लिए अनुकूल जैसा रखा जाएगा। इम्तहान नहीं होगा। बच्चे को शक्ति अनुसार ही आगे आगे पढ़ाई करते जाएंगे। समय पत्रक का बन्धन नहीं रहेगा। इस प्रकार की मुक्त पाठशाला तथा सहज शिक्षण केन्द्र का मैं प्रयोग कर रही हूं।

काम कठिन तथा जटिल है। बहुत से उत्साही युवक–युवतियां मदद के लिए आ रही हैं और कार्य कर रहे हैं। उसके लिए धनराशि की आवश्यकता थी। मैं बहुत चिंता में थी। लेकिन भगवान के काम के लिए भगवान ही धनराशि भेजता है। आज माता जानकीदेवीजी बजाज के आशीर्वाद से मै चिंतामुक्त हो गयी हूं। मुझमें निर्भयता आ गयी है। काम आगे बढ़ाने का जोश बढ़ गया है।

मुझे मालूम है कि और भी धन की आवश्यकता रहेगी। फिर भी विश्वास है कि भगवान मुझे देता रहेगा, धनाभाव के कारण मेरा प्रयोग अधूरा नहीं रूकेगा। भगवान से प्रेरणा तथा आशीष मांग रही हूं।